डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना,मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmtjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा–2 के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–24 अप्रैल, 2020)

आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास में द्विवेदी युग का योगदान

सन् 1900 ई. से 1918 ई. तक का समय हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'द्विवेदी युग' के नाम से जाना जाता है। इसे आधुनिक काल का दूसरा चरण माना जाता है। आधुनिक काल का प्रथम चरण भारतेन्दु युग (1850–1900) है। प्रथम चरण में जिस तरह समूची साहित्य चेतना के सूत्रधार भारतेन्दु हरिष्चन्द्र हैं, उसी तरह आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास के दूसरे चरण का सूत्रधार महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं। भारतेन्दु युग का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान राष्ट्रीय चेतना का प्रसार, खड़ी बोली हिन्दी गद्य का आविष्कार, गद्य और पद्य दोनों क्षेत्रों में एक सषक्त माध्यम के रूप में खड़ी बोली गद्य की अभिव्यक्ति, 'निज भाषा की उन्नति' पर बल तथा विविध काव्य रूपों– कहानी, उपन्यास, नाटक, जीवन–चरित, आलोचना, एकांकी, रिपोर्ताज आदि के विकास और विस्तार है। भारतेन्दु युग की परंपरा का ही विकास अपनी निरंतरता में द्विवेदी युग की परंपरा से सूत्रबद्ध है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से युगीन भाषा और साहित्य रूपों को सुदृढ़ किया। 'सरस्वती' पत्रिका को इस युग की एक बड़ी संस्था के रूप में देखा जाता है। सन् 1900 ई0 में चिंतामणी घोष ने इसकी स्थापना की थी। इंडियन प्रेस प्रयाग (इलाहाबाद) से इस पत्रिका का पहला अंक जनवरी, 1900 में प्रकाषित हुआ। 1903 ई0 से 1920 ई0 तक इस पत्रिका का सफल संपादन द्विवेदी जी ने किया। 1976 के बाद इसका प्रकाषन बंद हो गया। द्विवेदी जी के समय में इस पत्रिका का प्रकाषन पहले झाँसी से फिर कानपुर से होने लगा। द्विवेदी जी ने एक ओर भाषा के स्तर पर व्याकरणिक अनुषासन को सुदृढ़ किया वहीं दूसरी ओर हिन्दी साहित्य का प्रेरक मार्गदर्षक बनकर साहित्य के विकास और विस्तार का मार्ग प्रषस्त किया। उन्होंने 'सरस्वती' के माध्यम से ज्ञानवर्द्धन करने के साथ–साथ रचनाकारों को भाषा का महत्त्व समझाया और 'राई' से लेकर पर्वत' तक के किसी भी विषय पर साहित्य रचना के लिए प्रेरित किया। भाषा के परिष्कार और संस्कार का पूरा श्रेय द्विवेदी जी को जाता है। उन्होंने साहित्य निर्माण के साथ राष्ट्रीय चेतना को गढ़ने पर बल दिया। गद्य–पद्य के लिए खड़ी बोली हिन्दी को प्रोत्साहन देकर इन्होंने काव्य लेखन में ब्रजभाषा के विवाद को सुलझाया। उनके समय की कोई भी रचना ऐसी नहीं है, जिसपर उनकी लाल कलम नहीं चली हो। इस युग के सर्वाधिक चर्चित कवियों में बालकृष्ण षर्मा नवीन और राष्ट्रकवि मैथिलीषरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔंध', महावीर प्र0 द्विवेदी,

रामधारी सिंह 'दिनकर', सोहनलाल द्विवेदी, जगन्नाथदास रत्नाकर आदि मुख्य हैं और गद्य के क्षेत्र में प्रेमचंद।

महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी के महान साहित्यकार, पत्रकार एवं एक नये युगप्रवर्तक थे। उन्होंने युग की साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना को एक नयी दिषा और दृष्टि प्रदान की। उनके व्यापक योगदान को लेकर ही आधुनिक हिन्दी साहित्य का दूसरा युग 'द्विवेदी युग' के नाम से जाना जाता है। इस युग में हिन्दी साहित्य की आधुनिक परंपरा यानी भारतेन्दु युग का व्यापक परिमार्जन एवं विकास हुआ। खासकर कविता, आलोचना और कथा साहित्य में पर्याप्त प्रौढ़ता आई। इस युग में मुक्तकों के स्थान पर महाकाव्य, आख्यान काव्य (Ballads), प्रेमाख्यान काव्य, प्रबंध काव्य, गीतिकाव्य और गीतों से सुसज्जित काव्य का निर्माण हुआ। गद्य के क्षेत्र में घटना प्रधान, चरित्र प्रधान, भाव प्रधान, ऐतिहासिक तथा पौराणिक उपन्यासों और कहानियों की रचना हुई। समालोचना और निबंधों के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व प्रगति हुई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि द्विवेदी युग में भारतेन्दुकालीन कविता और राष्ट्रीय चेतना का व्यापक विकास हुआ। भारतेन्दु युग में खुलकर राष्ट्रीय चेतना का प्रचार–प्रसार हुआ, जबकि द्विवेदी युग के कवियों ने खुलकर अंग्रेजों का अतिक्रमण करने का साहस नहीं कर पाये। वे अपनी वाणी में राष्ट्रीय एकता का उद्दात स्वर नहीं भर सके। बावजूद इसके ये कवि अपनी षालीनता में राष्ट्रीय चेतना को उत्प्रेरक रूप में अभिव्यक्त किया। यह युगीन गाँधीवादी आदर्षों के प्रभाव का प्रतिफल था, जिसमें आक्रामकता के लिए कहीं कोई स्थान नहीं था। कांग्रेस के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रभाव तले आजादी हासिल करने की व्याकुलता, समस्याओं के निराकरण के प्रति चिन्ता और आत्म समीक्षा की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। मैथिली षरण गुप्त की पंक्ति है–

'हम कौन थे ? क्या हो गये ? क्या होंगे अभी ?
आओं विचारे आज मिलकर ये समस्याएं सभी।

विज्ञान युग की बौद्धिकता और संदेहवाद की स्थिति इस काल की कविताओं में मिलती है, जिसके कारण इस युग के साहित्य में प्राचीन धार्मिक रूढ़ियों का खंडन तथा नये आदर्षवादी मूल्यों को स्थापित किया गया है। 'साकेत' की उर्मिला, 'प्रियप्रवास' की राधा, और गुप्त जी की यषोधरा में समाज सुधार के साथ युग की नारी के अधिकारों की तड़प दिखलायी पड़ती है। इसे नारी सषक्तीकरण की पृष्ठभूमि के रूप में हम देख सकते हैं। निष्कर्षतः द्विवेदी युग की मूल चेतना इतिवृतात्मकता, व्याकरणिक अनुषासन, समसामयिक सामाजिक सुधार, राष्ट्रीयता का प्रसार और नारी के अधिकारों के प्रति भावनात्मक संवेदनषीलता, राजनैतिक पराधीनता और राष्ट्रीय संघर्ष की धारा से परिचालित है।

दिनांक : 24 / 04 / 2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**